214hi16

16

बचत और बीमा

उत्पादन और उपभोग के अतिरिक्त बचत भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। हम सब अपना वर्तमान और भावी जीवन ठीक प्रकार से बिताना चाहते हैं। ऐसा करने के लिए, हम वस्तुओं का उत्पादन करते हैं और उनका उपभोग करते हैं। किन्तु हम अपने उत्पादन में से आज ही सब चीजों का उपभोग कर लें तो कल उत्पादन गतिविधियों को आरम्भ करने के लिए हमारे पास कुछ नहीं रहेगा। इसीलिए यह महत्वपूर्ण है कि आज हम जो उत्पादन करते है उससे कम उपभोग करें। हमारी उत्पादन गतिविधियों को भविष्य में जारी रखने के लिए बचत आवश्यक है। किन्तु हम यह भी जानते हैं कि भविष्य अनिश्चित है और इसका पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता। कोई भी निश्चय के साथ नहीं कह सकता कि भविष्य में हमारे स्वास्थ्य, जीवन, सम्पत्ति आदि पर क्या प्रभाव पड़ेगा। उनका ठीक प्रकार से ध्यान रखना होगा जिससे भविष्य में उत्पादन और उपभोग की गतिविधियां निर्विध्नता से चलती रहे। इसी संदर्भ में, जीवन, स्वास्थ्य और सम्पत्ति आदि की हानि से रक्षा के लिए बीमा अनिवार्य है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे :

- बचत का अर्थ और आवश्यकता;
- बचत के प्रयोग की व्याख्या;
- ब्याज की अवधारणा;
- बीमा का अर्थ और आवश्यकता;
- जीवन बीमा, स्वास्थ्य बीमा, मोटर-गाड़ी बीमा के विषय में।

16.1 बचत का अर्थ

वास्तव में लोग मुद्रा, वर्तमान और भविष्य दोनों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कमाते हैं। यदि वे अपनी समस्त आय आज खर्च कर देते हैं तो भविष्य के लिए कुछ नहीं

बचेगा और तब वे कल अपनी आवश्यकताओं को सन्तुष्ट नहीं कर पाऐगें। किन्तु, यदि बचत है, तो इसका प्रयोग भविष्य में किया जा सकता है। इसलिए बचत आय की वह राशि है जिसे वर्तमान में वस्तुओं और सेवाओं और अन्य वस्तुओं पर व्यय करने के पश्चात् भविष्य के लिए रखा जाता है। इसका अर्थ यह है कि **बचत आय का उपभोग पर अधिशेष** है। हम लिख सकते हैं कि

बचत = आय – उपभोग

नीचे दी गई सारणी 16.1 का अध्ययन करो। सारणी में मिस्टर X नामक एक व्यक्ति की मासिक आधार पर आय और व्यय का एक वर्ष का विवरण दिया है। देखो, हमने अप्रैल महीने से आरम्भ किया है और मार्च महीने पर अन्त किया है। यह इसलिए है क्योंकि भारत में वित्तीय वर्ष की अवधि इस वर्ष के अप्रैल से अगले वर्ष के मार्च तक होती है।

सारणी 16.1 मिस्टर X का मासिक आधार पर पिछले वर्ष का आय और व्यय

माह	आय (रु.)	व्यय (रु.)	बचत (रु.)
अप्रैल	15,500	14,300	1200
मई	15,500	15,000	500
जून	15,500	15,500	0
जुलाई	15,500	15,500	0
अगस्त	15,500	15,500	0
सितम्बर	15,500	15,000	500
अक्टूबर	15,500	14,000	1500
नवम्बर	15,500	15,500	0
दिसम्बर	15,500	15,000	500
जनवरी	15,500	15,300	200
फरवरी	15,500	15,400	100
मार्च	15,500	15,000	500
कुल	**1,86,000**	**1,81,000**	**5,000**

आप देखते हैं कि मिस्टर X की पिछले वर्ष की कुल आय 1,86,000 रु. थी। उसका कुल व्यय 1,81,000 रु. था। इसलिए उसने पिछले वर्ष 5000 रु. की बचत की।

अर्थात 1,86,000 – 1,81,000 = 5000 रु.

ध्यान दें, हमने पूरे एक वित्तीय वर्ष का विवरण बचत की गणना करने के लिए ध्यान में रखा है, एक या दो महीने का नहीं। यह इसलिए क्योंकि कुछ व्यय, प्रत्येक माह में करने अनिवार्य नहीं होते, वर्ष के अन्त में किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, हम भोजन और दैनिक प्रयोग की वस्तुओं आदि पर व्यय नियमित रूप से करते हैं। किन्तु, फीस, सरकार का टैक्स आदि

की गणना वार्षिक आधार पर की जाती है। इसलिए, बचत की गणना करने के लिए पूरे वर्ष का आय और व्यय का विवरण लेना बेहतर है।

16.2 बचत किस प्रकार लाभदायक है?

बचत निम्न ढंग से लाभदायक है।

(i) पिछले उदाहरण से आरम्भ करते हैं। मिस्टर X ने पिछले वर्ष 5000 रु. की बचत की। इससे यह संकेत मिलता है कि वर्तमान वर्ष के आरम्भ में वह अतिरिक्त 5000 रु. से प्रारम्भ करता है। इसलिए इस वर्ष उसकी आय कम से कम 5000 रु. से बढ़ेगी, बशर्ते उसकी आय और व्यय में कोई परिवर्तन नहीं होता है। इसका अर्थ है कि बचत से मनुष्य की भावी आय में बृद्धि होती है।

(ii) बचत, भविष्य के लिए, एक सुरक्षा का कार्य कर सकती है। कैसे? मान लो मिस्टर X वर्ष के आरम्भ में बीमार हो जाते हैं। इसलिए, वह एक सप्ताह तक काम पर नहीं जा सके। वह एक सप्ताह तक कैसे सह सकते हैं? चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वह कुछ समय तक काम चलाने के लिये पिछले वर्ष की बचत को हमेशा प्रयोग कर सकते हैं, जब तक कि वह बीमारी से ठीक नहीं होते और काम पर जाना और आय कमाना आरम्भ नहीं करते।

पाठगत प्रश्न 16.1

1. बचत की परिभाषा दीजिए।
2. यदि आय 1000 रु. है और बचत 200 रु. है तो उपभोग की राशि क्या है?

16.3 आप अपनी बचत कहाँ रखते हैं?

प्रत्येक परिवार में एक सामान्य रीति यह है कि छोटे श्रेणी के सिक्के और करेन्सी नोट जैसे 50 पैसे 1 रु., 2 रु. को एक छोटे बचत के डिब्बे में डाला जाता है। परिवार के सभी सदस्यों को इस छोटी बचत की क्रिया में सहयोग देने में प्रसन्नता होती है। कुछ समय पश्चात् जैसे एक या कई मास में जब डिब्बा खोला जाता है तो परिवार को पता चलता है कि डिब्बे में अच्छी खासी राशि है जो किसी नई वस्तु को खरीदने में बहुत लाभकारी होती है। परिवारों को इस प्रकार का बचत का डिब्बा रखना, एक प्रकार की प्रथा है।

एक परिवार का बचत का डिब्बा, बचत की एक अनौपचारिक विधि है। इसका प्रयोग बड़ी राशि की बचत करने के लिए नहीं किया जा सकता। इस प्रकार मुद्रा रखना सुरक्षित भी नहीं है क्योंकि चोरी का डर रहता है। डिब्बे में रखी गई मुद्रा, जब तक वह खोला नहीं जाता, निरर्थक रहती है। क्योंकि यह एक निजी मामला है, इसे विशेष परिवार के अलावा और कोई प्रयोग नहीं कर सकता। अंत में, इस प्रकार की बचत के बदले मे किसी प्रकार का प्रतिफल भी प्राप्त नहीं होता।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मुद्रा को रखने के लिए एक सुरक्षित स्थान की आवश्यकता है। प्रयोग के लिए भी इसकी आवश्यकता होती है। इसे बेकार नहीं छोड़ना चाहिए। कल्पना करो कि आपने 5000 रु. की बचत की है। यदि आप इसे बहुत समय तक प्रयोग नहीं करते तो यह एक सूखी लकड़ी के समान बिना प्रयोग के बेकार रहती है। आप इसका प्रयोग न तो स्वयं कर रहे हो न ही किसी दूसरे को करने दे रहे हो। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए समाज ने ऐसी संस्थाएं उपलब्ध कराई हैं जहाँ आप अपनी बचत रख सकते हो। वे डाकघर और व्यवसायिक बैंक हैं।

16.3.1 डाकघर बचत बैंक

कोई भी व्यक्ति अपनी व्यय नहीं की गई मुद्रा को डाकघर बचत बैंक में रख सकता है। आप को डाकघर लगभग हर बस्ती में मिल जायेगा। इसलिए यह किसी भी व्यक्ति की पहुँच में होता है। देश का कोई भी नागरिक डाकघर में अपने नाम में न्यूनतम 50 रु. जमाकर खाता खोल सकता है। कोई भी व्यक्ति कितने भी समय के लिए इसमें मुद्रा रख सकता है तथा वह किसी भी समय इस खाते में से कितनी भी राशि निकाल सकता है बशर्ते कि इस खाते में न्यूनतम 50 रु. शेष रहें। डाकघर द्वारा, खाताधारी की लेन-देन की प्रविष्टियों का लेखा प्रमाण रखने के लिए एक पासबुक उपलब्ध कराई जाती है। डाकघर, बचत बैंक खाते में बचत पर नाममात्र का ब्याज भी देता है। यदि कोई व्यक्ति चैक बुक लेना चाहता है तो उसे अपने खाते में न्यूनतम 500 रु. की राशि रखनी होगी।

16.3.2 व्यवसायिक बैंकों में बचत खाता

हम पहले ही कह चुके हैं कि व्यवसायिक बैंक लोगों की जमा स्वीकार करते हैं। कोई व्यक्ति जो मुद्रा बचाना चाहता है बैंक में बचत खाता खोल सकता है। एक खाता खोलने के लिए आवश्यक न्यूनतम राशि और न्यूनतम शेष जो मुद्रा निकालने के पश्चात खाते में रहना चाहिए, जहाँ व्यक्ति मुद्रा बचाता है, उस विशेष बैंक द्वारा निश्चित की जाती है। डाकघर की तरह बैंक भी जमा कर्ता को एक पासबुक उपलब्ध कराता है जिसमें जमा और निकाली गई राशि और खाते में शेष राशि का विस्तृत ब्यौरा दिखाया जाता है। एक व्यवसायिक बैंक, बचत बैंक खाते पर नाममात्र का ब्याज भी देता है।

16.4 बचत के प्रयोग

बचतों का प्रयोग ऋण देने, ऋण लेने और अर्थव्यवस्था के विकास के उद्देश्य के लिए किया जा सकता है।

(i) ऋण देना और ऋण लेना

कोई व्यक्ति जो बचत करता है, ऋणदाता हो सकता है क्योंकि वर्तमान में उसके पास अधिशेष मुद्रा उपलब्ध होती है। समाज में बहुत से लोग, विभिन्न कारणों से, उससे अधिक उपभोग करते हैं जितना उनकी वर्तमान आय उन्हें स्वीकृति देती है। ये लोग आवश्यकता के समय मुद्रा उधार ले सकते है और इसका भविष्य में भुगतान कर सकते हैं।

(ii) अर्थव्यवस्था का विकास

जब डाकघर और बैंकों में बहुत से लोग मुद्रा की बचत करते हैं तो समाज के द्वारा प्रयोग के लिए मुद्रा की एक बहुत बड़ी राशि उपलब्ध हो जाती है। हम जानते है कि बूँद-बूँद को मिलाकर सागर बन जाता है। इसी प्रकार, एक व्यक्ति बहुत कम बचत कर सकता है जो इस बात पर निर्भर करता है कि वह कितना कमा रहा है और कितना खर्च कर रहा है। किन्तु जब बहुत से व्यक्ति बचत करना आरम्भ कर देते हैं, तो उनको मिलाकर एक बड़ी राशि बन जाती है। समाज के लिए, सड़कें, कार्यालय की इमारत, रेलवे स्टेशन, सड़कों पर रोशनी, मनोरंजन पार्क, विद्यालय आदि के निर्माण के लिए, मुद्रा की एक बहुत बड़ी राशि की आवश्यकता होती है। इसके कारण भविष्य में संपूर्ण देश को लाभ होता है। इसलिए, किसी व्यक्ति के द्वारा बचत देश के विकास की प्रक्रिया में लाभदायक होने की संभावना बन जाती है।

16.5 ब्याज, बचत पर प्रतिफल के रूप में

कोई भी व्यक्ति अपनी बचत का प्रयोग आय कमाने के लिए कर सकता है जिसे बचत पर प्रतिफल कहते हैं। यह प्रतिफल ब्याज कहलाता है। यह कैसे सम्भव होता है? हम जानते हैं कि एक व्यक्ति जिसने मुद्रा की बचत की है एक ऋणदाता हो सकता है, उस मुद्रा को एक ऋण लेने वाले को देकर जो अभी ऋण लेना चाहता है। इस बचत के प्रयोग के लिए ऋण दाता ऋणी से कुछ राशि वसूल कर सकता है। जिसे ऋणी द्वारा भुगतान किया गया और ऋणदाता द्वारा कमाया गया ब्याज कहते हैं। सामान्यरूप से ऋणी, ऋणदाता की राशि का भुगतान ब्याज सहित किसी निश्चित भविष्य की तिथि पर कर देता है। ध्यान दो, जब ऋणी, ऋणदाता से मुद्रा लेता है तो हम कहते हैं कि ऋणदाता ने ऋणी को ऋण दिया है। इसका अभिप्राय यह है कि जब एक ऋणदाता अपनी बचत, एक ऋणी को देता है तो वह एक ऋण के रूप में बदल जाती है। ऋण की राशि ऋणी द्वारा, ऋणदाता को भविष्य में ब्याज सहित वापस करनी पड़ती है।

उदाहरण : मान लो सुश्री सरिता की 1000 रु. की बचत है। आशीष उस मुद्रा को उधार लेना चाहता है। इसलिए सरिता ऋणदाता और आशीष ऋणी हुआ। यह निश्चय किया गया कि आशीष को ऋण की राशि 1000 रु. एक वर्ष के पश्चात् वापस करनी होगी। यह भी निश्चय किया गया कि आशीष को 120 रु. ब्याज के रूप में भुगतान करना होगा। उसी के अनुसार आशीष ने,एक वर्ष बाद सरिता को कुल राशि 1120 रु. (1000 + 120) का भुगतान किया। इसलिए, अपनी बचत को उधार देकर, सरिता ने जिस राशि की बचत की, उसको प्राप्त करने के अतिरिक्त 120 रु. ब्याज के रूप में कमाए।

15.5.1 ब्याज की दर

अब प्रश्न उठता है - सरिता ने आशीष को दिए गए प्रति 100 रु. पर कितनी राशि कमाई?

उत्तर : सरिता ने आशीष को 1000 रु. उधार दिए। उसने इस राशि पर 120 रु. कमाए।

इसलिए 100 रु. पर कमाई $= 120 \times \frac{100}{1000} = 12$ रु.

इसलिए सरिता ने 12 रु. प्रति 100 रु. ब्याज के रूप में कमाए। अर्थात 12% प्रतिवर्ष। जब हम 100 पर मूल्य ज्ञात करते है तो हम उसे प्रतिशत कहते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि सरिता ने 12 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से कमाई की। यह 12 प्रतिशत प्रतिवर्ष, ऋणी (आशीष) द्वारा भुगतान की गई और ऋणदाता (सरिता) द्वारा प्राप्त ब्याज की दर कहलाती है। 120 रु. 1000 रु. ऋण की राशि पर कुल ब्याज की राशि है। यह ऋण की राशि मूल राशि भी कहलाती है।

ब्याज की दर को, ऋणदाता द्वारा कमाई गई ऋणी द्वारा भुगतान की गई प्रति 100 रु. जो ऋणदाता ने ऋणी को एक वर्ष के लिए दिए, के रूप में परिभाषित किया जाता है।

16.5.2

क्योंकि लोग अपनी बचतों को डाकघर और बैंकों में रखते हैं, उन्हें ब्याज प्राप्त होता है। डाकघर व्यक्तियों को लगभग 3.5 प्रतिशत ब्याज देते है और बैंक लगभग 4 प्रतिशत प्रतिवर्ष। जब डाकघरों या बैंकों में आप अपनी बचतों पर ब्याज प्राप्त करते हो तो आपकी मुद्रा बढ़ती है। इसलिए जब आज मुद्रा की बचत की जाती है तो कल यह बढ़कर बड़ी राशि हो जाती है।

पाठगत प्रश्न 16.2

1. ब्याज की दर की परिभाषा दीजिए।
2. ऋण दाता और ऋणी में अन्तर कीजिए।
3. यदि आप 200 रु. उधार देकर 20 रु. प्रति माह कमाते हैं तो ब्याज की दर क्या है?

आओ कुछ करें

अपने पास के डाकघर में जाओ और एक बचत बैंक खाता खोलने के विषय में पूछताछ करो।

16.6 बीमा

हम अनिश्चितता की दुनिया में रह रहे हैं। इसका तात्पर्य है कि हम यह नहीं जानते कि भविष्य में क्या होगा? बहुत सी चीजें हमारे नियन्त्रण में नहीं हैं। नीचे के उदाहरण लीजिए।

(अ) एक किसान अच्छी वर्षा पर निर्भर करता है जिससे कि वह अनाजों की अधिक मात्रा का उत्पादन कर सके। किन्तु किसान का वर्षा पर कोई नियन्त्रण नहीं होता । यदि अच्छी वर्षा हो जाती है तो उसकी फसल अच्छी हो जाती है। किन्तु यदि वर्षा नहीं होती तो सूखा पड़ जायेगा और किसान को भारी हानि उठानी पड़ेगी।

(ब) लोगों के पास मकान होते है जिनमें वे रहते हैं किन्तु सम्पत्ति को हानि पहुँचाने वाली कुछ आकस्मिक दुर्घटनाओं पर, जैसे आग, चोरी हो सकती है, उनपर उनका कोई नियंत्रण नहीं होता।

(स) आजकल बहुत से लोगों के पास, दो पहिए वाले और कार के रूप में मोटर-गाड़ियाँ होते हैं। क्योंकि वाहनों की संख्या बढ़ी है। चोरी के मामलों और सड़कों पर दुर्घटनाओं की संख्या भी बढ़ी है। कोई भी दुर्घटनाओं का पुर्वानुमान नहीं लगा सकता जिनसे टूटफूट तथा हानि होती है।

(द) हम सब बीमार पड़ते हैं और चिकित्सा और इलाज पर व्यय करते हैं। कोई भी पुर्वानुमान नहीं लगा सकता कि बीमारी कब आएगी? बीमारी के कारण हम कार्य नहीं कर सकते। इसके कारण, बीमारी की अवधि में हमें अपनी आय की हानि हो सकती है।

इस प्रकार, अनिश्चिताओं के भी अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। आश्चर्य की बात है, लाटरी जीतना भी अनिश्चित है। यह एक अप्रत्याशित लाभ है। तथापि, आय की हानि अथवा अनिश्चितता के कारण सम्पत्ति को हानि, एक चिन्ता का विषय है। अनिश्चितता में टूटफूट अथवा हानि का जोखिम शामिल होता है। कुछ सीमा तक हम सावधानी रख सकते हैं किन्तु उनसे पूरी तरह बचना सम्भव नहीं है।

ऊपर कहे गए कारणों से जिसे भी हानि होती है वह चाहेगा कि उसे उस हानि/टूटफूट के लिए पूरा या आंशिक रूप में मुद्रा के रूप में मुआवजा मिल जाए। बीमा, सम्बन्धित व्यक्ति को, हानि/टूटफूट के लिए, कुछ मुआवजा सुनिश्चित करता है। बीमा एक वस्तु या उत्पाद की तरह है। कोई भी व्यक्ति जिसे अपनी सम्पत्ति नष्ट होने या हानि होने की सम्भावना है वह कुछ मुद्रा देकर बीमा करा सकता है। **बीमे को बेचने वाला, बीमाकर्ता और खरीदने वाला, बीमाधारी, कहलाता है। बीमाधारी या क्रेता द्वारा जो मुद्रा का भुगतान किया जाता है उसे प्रीमियम कहते हैं।** सामान्य रूप से बीमे की रकम निश्चित वर्षों के लिए दी जाती है। यदि इन अवधि में कोई हानि हो जाती है तो बीमाधारी व्यक्ति को बीमाकर्ता से उचित मुआवजा मिल जाता है।

बीमा की परिभाषा

बीमा को एक वित्तीय उत्पाद के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे बीमाधारी द्वारा, उसके नियन्त्रण के बाहर, किसी भी घटना के कारण होने वाली हानि की पूरी अथवा आंशिक भरपाई के लिए खरीदा जाता है।

सामान्य रूप से बीमा को बेचने वाली, बीमा कम्पनी होती है। जब बीमाधारी व्यक्ति को कोई हानि होती है तो बीमा कम्पनी हानि की क्षतिपूर्ति करने के लिए उसे कुछ राशि का भुगतान करती है। इसे बीमे का दावा कहते हैं। इसलिए बीमा, किसी व्यक्ति को अनिश्चितता से होने वाले जोखिम को कम करने की अनुमति देता है।

पाठगत प्रश्न 16.3

1. बीमाकर्ता तथा बीमाधारी में भेद कीजिए।
2. अनिश्चितता के दो उदाहरण दीजिए।
3. क्या बीमा एक उत्पाद है?

16.7 कुछ चुने हुए बीमे के उत्पाद

आइये, हम निम्न बीमा उत्पादों की संक्षेप में चर्चा करते हैं।

(i) मोटर गाड़ियों का बीमा

(ii) स्वास्थ्य बीमा

(iii) जीवन बीमा

(i) मोटर गाड़ियों का बीमा

व्यक्ति, जिनके पास स्कूटर, मोटर साइकिल, कार आदि हैं वे सम्बन्धित बीमा कम्पनी से मोटर गाड़ी बीमा खरीद सकते हैं। क्योंकि मोटर गाड़ियाँ टिकाऊ वस्तुएं है और उनका जीवनकाल दीर्घ जैसे 10 से 15 वर्ष होता है, बीमा पोलिसी निम्न प्रकार से प्राप्त की जाती है।

पहले वर्ष में वाहन नया है इसलिए बीमा कम्पनी, बीमाधारी से अधिक राशि प्रीमियम के रूप में वसूल करती है। तदनन्तर, वाहन पुराना हो जाता है इसलिए धीरे-धीरे इसकी कीमत घटती है। इसलिए कम्पनी बीमाधारी से कम प्रीमियम वसूल करती है। जब मोटर गाड़ी को कोई नुकसान होता है, तो बीमा कम्पनी बीमा पॉलिसी में वर्णित शर्तों के आधार पर गणना करके दावे का भुगतान करती है।

(ii) स्वास्थ्य बीमा

स्वास्थ्य बीमा योजना के अन्तर्गत एक व्यक्ति जो इस बीमा को खरीदता है वह चिकित्सा/इलाज पर जो खर्च करता है, उसमें से कुछ राशि प्राप्त कर सकता है। इस विषय में भी बीमा कम्पनी रूचि रखने वाले व्यक्ति से प्रति वर्ष एक नाममात्र की राशि प्रीमियम के रूप में लेती हैं। जब भी बीमाधारी बीमार पड़ता है और चिकित्सा पर व्यय करता है, तो बीमा कम्पनी उस भार को कम करने के लिए व्यक्ति को कुछ राशि देती है। सामान्य रूप से यदि एक व्यक्ति छोटी उम्र में स्वास्थ्य बीमा खरीदता है तो प्रीमियम कम होता है। व्यक्ति की उम्र बढ़ने के साथ-साथ बीमा शुल्क की राशि भी बढ़ती जाती है।

(iii) जीवन बीमा

एक व्यक्ति एक विशेष अवधि के लिए जीवन बीमा खरीद सकता है। समय अवधि 10 से 25 वर्ष हो सकती है। बीमित व्यक्ति को हर वर्ष बीमा कम्पनी को कुछ राशि प्रीमियम

के रूप में देनी पड़ती है। कम्पनी व्यक्ति को समय अवधि पूरी होने पर दावा वापस कर देती है। बीमा कम्पनी द्वारा यह राशि वार्षिक आधार अथवा किस्तों में भी भुगतान की जा सकती है। यदि व्यक्ति की इस बीच में मृत्यु हो जाती है तो भुगतान उसके मनोनीत व्यक्ति को कर दिया जाता है।

आपने क्या सीखा

- बचत वह आय है जो उपभोग के पश्चात बच जाती है।
- लोग भविष्य में सुरक्षा और बचत पर ब्याज कमाने के लिए बचत करते हैं।
- ऋण दाता वह व्यक्ति है जिसने मुद्रा की बचत की है और वह इसे ऋणी को किसी ब्याज की दर पर उधार देता है।
- ऋणी वह व्यक्ति है जो ब्याज की दर का भुगतान करके मुद्रा उधार लेता है।
- लोग अपनी मुद्रा की बचत डाकघर और बैंकों में करते हैं।
- बीमा एक उत्पाद है जिसे लोग जीवन-स्वास्थ्य, मोटर गाड़ी आदि सम्पत्ति की हानि के जोखिम को कम करने के लिए खरीदते हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. बचत की परिभाषा दीजिए। इसके दो उपयोग बताओ।
2. बचत की गणना कैसे होती है। लोग बचत क्यों करते हैं?
3. डाकघर बचत बैंक पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखो।
4. लोग बीमा क्यों खरीदते है?
5. मोटरगाड़ी बीमा की व्याख्या कीजिए।
6. स्वास्थ्य और जीवन बीमा में अन्तर कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

पाठगत प्रश्न 16.1

1. बचत को उपभोग पर आय के अधिशेष के रूप में परिभाषित किया जाता है।
2. 800 रु.

पाठगत प्रश्न 16.2

1. ब्याज की दर को ऋणी द्वारा ऋणदाता को एक वर्ष के लिए प्रत्येक 100 रु. के प्रयोग के लिए किए गए भुगतान के रूप में परिभाषित करते हैं।

2. **ऋणदाता** - व्यक्ति अथवा संस्था जो मुद्रा उधार देता है।

   ऋणी - व्यक्ति अथवा संस्था जो ऋणदाता से मुद्रा उधार लेता है।

3. 120 प्रतिशत

पाठगत प्रश्न 16.3

1. बीमाकर्ता बीमे का विक्रेता होता है तथा बीमाधारी बीमे का क्रेता होता है। बीमाधारी बीमा खरीदने वाला होता है।

2. सूखा, बीमारी

3. हाँ

मॉड्यूल 6 : अर्थशास्त्र में आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण और विश्लेषण

17. आंकड़ों का संकलन और प्रस्तुतीकरण
18. आंकड़ों का विश्लेषण